ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

परिवार में संरचनात्मक परिवर्तन : समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ.गजानन खंडू सोनुने

शोध छात्र (पी. डी. एफ), समाजशास्त्र विभाग, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

गोषवारा:-

आधुनिक समय में परिवार के संरचना तथा प्रकारों में परिवर्तन हो रहा है। आधुनिकता, नगरीकरण और बढ़ते उपभोक्तावाद के कारण परिवार में परिवर्तन हो रहे हैं। संयुक्त परिवार हमारे समाज की रीढ़ थी। मगर अब वर्तमान में परिवारों का विघटन और छोडे परिवार की और झुका दिख रहा है। यह हमारी संस्कृति के मूल्यों से मेल नहीं खाता है। परिवार में हर व्यक्ती को कुछ जिम्मेदारी थी उस जिम्मेदारी को छोडकर आज के नव विवाहीत अपने मुल परिवार को छोडकर शहरों मे रह रहे है। भारतीय परिवारों में परिवर्तन पिछले कुछ दशकों में तेज़ी से देखने को मिला है। आधुनिकता, शहरीकरण, और वैश्वीकरण के प्रभाव से पारंपरिक परिवार प्रणाली में कई बदलाव आए हैं। इन परिवर्तनों को मुख्य रूप से सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिवर्तन के संदर्भ में देखा गया है।

कुटशब्द:-

परिवार, संरचना, माँ - बाप, बच्चे, सामाजिक परिवर्तन, सयुक्त परिवार, विभक्त परिवार, एकल परिवार, स्थिती

प्रस्तावना:-

भारतीय समाज में संयुक्त परिवारों का प्रचलन था, जहाँ कई पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे रहती थीं। तब परिवार के सदस्य मिलजुलकर रहते थे। अब आर्थिक और पेशेवर आवश्यकता ओं के चलते एकल परिवारों का चलन बढ़ा है। नौकरी और शिक्षा के कारण लोग शहरों में बस रहे हैं। जिससे पारंपरिक परिवार व्यवस्था टूट रही है। महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में बढ़ती भागीदारी ने परिवारों की संरचना को प्रभावित किया है। पहले महिलाएँ घर तक सीमित रहती थीं। लेकिन अब वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं। जिससे परिवार में उनकी भूमिका और सम्मान बढ़ा है। आधुनिक जीवनशैली और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण पारंपरिक मूल्यों और रीति-रिवाजों का महत्व कम हो रहा है। त्योहारों, पारिवारिक समारोहों और परंपराओं में पहले जैसी भागीदारी अब कम हो गई है। संयुक्त परिवारों के टूटने से बुजुर्गों की स्थिति में बदलाव आया है। पहले वे परिवार के मुखिया होते थे, लेकिन अब वे अक्सर अकेले रह जाते हैं। या वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर होते हैं। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच विचारधाराओं का अंतर बढ़ा है। युवा पीढ़ी तकनीकी और आधुनिकता की ओर झुकी हुई है। जबकि पुरानी पीढ़ी पारंपरिक जीवन शैली को महत्व देती है। यह अंतर कभी-कभी परिवार में संघर्ष का कारण बनता है। शिक्षा और तकनीकी विकास ने परिवार के सदस्यों के सोचने और जीने के तरीके को बदल दिया है। सोशल मीडिया और इंटरनेट के कारण पारिवारिक संवाद कम हो गया है, जिससे परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक दूरी बढ़ रही है। आजकल परिवार के सभी सदस्य आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की कोशिश करते हैं। इससे परिवार में संतुलन और समानता बढ़ी है, लेकिन साथ ही परिवारों में आर्थिक प्रतिस्पर्धा और अलगाव भी बढ़ा है।

शोध निबंध का उदेश:-

परिवार में संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक विवेचन करना है।और आज की वर्तमान परिवारीक स्थिती को समजना।

अध्ययन पध्दती:-

इस शोध के लिए सामाजिक अनुसंधान पध्दती के द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया। इस में संदर्भ किताबे, इंटरनेट का साहारा लियागया है। इस शोध के लिए वर्णनात्मक और निरीक्षणात्मक अध्ययन पद्धती करते हुए द्वितीय स्त्रोतों उपयोग किया गया है। इस में गुणात्मक शोधविधी का प्रयोग किया गया है।

सामाजिक परिवर्तन:-

मेरिल और एल्ड्रिज के शब्दों में, सामाजिक परिवर्तन वह है जो कल नही था और आज है। हमारे पुर्वज जिस तरह का व्यवहार करते थे या जैसी उनके परिवार की व्यवस्था थी वह आज नही है, तो यह सामाजिक परिवर्तन है। परिवार के बारे में अनेक समाजशास्त्र विचारक को ने परिवार के संदर्भ मे अधय्यन कार्य

किया गया । तब की परिवार की स्थिती और आज की स्थिती में बोहोत बडे फेमाने पर अंतरीक संरचनात्मक बदल और परिर्वतन हो गये है। इस संरचनात्म्क पैलू पर नजर डाला गया है। विलियम जे. गूड ने लगभग पचास वर्षा तक अफ्रीका, मध्य एशिया, चीन, भारत, जापान जैसे परिवार का अध्य्यन किया और अपने अघ्य्यन में उन्होने पाया की, कृषी प्रधान समाज में परिवार एक आर्थिक इकाई के रूप में काम करता है। परिवार का स्वरूप साधारणतया सत्तावादी स्थिर एंव विस्तृत होता है। पुत्र अपने पिता के काम को विरासत के रूप में प्राप्त करता है। स्त्री और पुरूषों कं बीच काम का स्पष्ट बॅटवारा होता है। लेकिन आज बदलती परिस्थिति में ऐसे परिवार में भी परिवर्तन हो रहा है। विस्तृत परिवार धीरे- धीरे दाम्पत्य परिवार में बदलता जा रहा है।

क्लेटन आर. आर ने पारिवारिक व्यवस्था में परिवर्तन को आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन से जोडा है। उनका मानना हे की, जब समाज में आर्थिक व्यवस्था प्रमुख रूप से कृषी पर आधारित थी। तो उस समय विस्तृत परिवार की प्रधानता थी । तथा कृषी व्यवस्था के विकास के पुर्व आदिमकालीन समाज में प्रमुखरूप से मूल परिवार की प्रधानता थी। लेकिन जैसे- जैसे समाज अपने कृषी क्षेत्र से औद्योगिक क्षेत्र की ओर बढता गया । मूल परिवार की प्रमुखता फिर बढने लगी। इनका कहना था की, मूल परिवार आदिम एवं आधुनिक अर्थव्यवस्था की विशेषता है तो विस्तृत परिवार कृषी प्रधान समाज की।

परिवार में संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक विवेचन :-

भारत में परिवार में सदस्य संख्या अधिक रहती थी। सयुक्त परिवार में रहते थे तब परिवार में अधिक संख्या और परिवार बडा होता था। उस वक्त कुछ सदस्य काम करते और अधिक सदस्य कुछ भी काम या कार्य नही करते थे। फिर भी परिवार में खुशाली थी और सब मिल जुलकर रहते थे और अपलेपण की भावना थी। हर व्यक्ती को पाच- छे बच्चे उस वक्त हुवा करते थे । अधिक बच्चे होने पर बडा परिवार को अच्छा कहा जाता था। बच्चे ईश्वर की देन है उस तरह की मानिकता होने के कारण जाता बच्चे हुवा करते थे उसी कारण परिवार बडा हुवा करता था। परिवार में दादा ,दादी, मॉ- बाप, बच्चे, भाई - बहन फुफा, यादी रहते थे। उस काल में शादी कम उम्र में करते थे। इस कारण शादी कम उम्र करने कारण प्रजन्न्न क्षमता अधिक होती थी बच्चे अधिक पैता होते थे और बच्चे पैदा बंद करने की कोई सुविधा न होने कारण परिवार की सदस्यों मे संख्या बडोदरी हुवा करती थी अधिक दर लोग अनपड थे और शिक्षा से वंचित थे। धिरे- धिरे संयुकत परिवार की जगह विभक्त परिवार ने जगह ली रही है। अब देखा जाए तो भारत में अधिक दर विभक्त परिवार में जीवन रही जनसंख्या दिखाई देती हे। विविध सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिर्वतन होने कारण व्यक्तीयों के जीवन आपन और जीवन जिना का ढग बदलता गया इस तरह परिवार के संरचना में बदलवा होता गया। पहिले कम उम्र में शादी हुवा करती थी अब आठरा साल लडकीयों के लिए निधारीत और लडको के इक्कीस साल निधारीत की। जैसे- जैस शिक्षा का महत्त्व लोग को समज में आने लगा। वैसे - वैसे परिवार की सदस्या संख्या घटने लगी। शिक्षा के लिए करीबन तीस- पस्तीस साल शिक्षण के लिए खर्च होने कारण शादी के लिए देरी हो रही है । उस कारण शादी नही होने से जनसंख्या में कमी हो रही है क्योकी अधिक उम्र होने के कारण प्रजन्न क्षमता की कमी आ रही है। और आगे चलकर परिवार में हम दो हमारे दो यह संकल्पा सामने आ गई। सरकारो कार्यलय में नोकरी करनी है दो ही आप्त व्यक्ती को दो बच्चे से जाता बच्चे नही जाईए। परिवार मे कम सदस्यों की संख्या होने के कारण परिवार में प्रेम, आपुलकी, खुशाली, समाधान, आपलेपण की भावना कमी हो रही है। आगे- आगे शादी बंधन समाप्त हो रहा है आज नए लडका- लडकी शादी हो के कुछ दिन अच्छे दिन जाने के बाद पति- पत्नी में कुछ कारण से वाद- विवाद होने पर शादी के बंधन से मुक्त होते है। क्योकी आज की स्थिती में महिलाए विविध क्षेत्र में कार्य करती देख रही है। और हर क्षेत्र में महिलाए नौकरी कर रही है। इस कारण पति- पत्नी दोनों ही परिवार के लिए पैसे कमाते है। परिवार में कुछ कारण झगडा होता है तो महिलाए यह सोचनी लगी है की मुझे आपकी कोई जरूरत नही में भी पैसे कमाती हु उस कारण अधिक दर महिलाए सबलीकरण और स्वंलबन होना अभिमान के कारण पती को छोडनी बाते कह रही है। खुद के बच्चो का भी विचार न कर परिवार से अलग होने की बात कह रही है यह केवल शिक्षा के कारण पैसे कमाने लगी और खुद का जीवन में आपने

मजीसे जिना चाहती है। इस अभिमान के कारण परिवार तुट रहे है। फिर आगे एकल परिवार की संरचना निर्माण हो गई। परिवार में सिर्फ एक व्यक्ती होना एकल परिवार कहा जाए तो भी कोई गैर नही। आज के वर्तमान परिस्थीती में विधवा महिलाए, विधुर लोग यह एकल परिवार का हिसा बनते नजर आ रहे है। यह परिस्थीती उनके विवाहीत बच्चे उनकी देखभाल न करने से उनको एकल जीवन जिनेपर आज मजबूर है। भारत कें कुछ लोगो के लडके- लडकीया विदेश में स्थाई होने कारण वो अपने मॉ- बाप को छोडकर विदेश गये कुछ लोगो के बच्चे मूळ गाव छोडकर नौकरी, व्यवसाय और रोजगार के वास्ते शहर और नगरो में मॉ- बाप को छोडकर वहा बस गये । एक परिवार अलग- अलग रहने लग रहे है। कुछ परिवार के मॉ- बाप इसमें एक की मृत्यू हो गयी इस कारण एक को ही अकेला जीवन जिना व रहना पड रहा है। उनके लडके- लडकीया उनको पैसे, अन्नास, फळ देनिक खानेका अन्नास पुराते है। मगर लडके - लडकीयो को जन्म देकर भी अकेला जीवन जीना पड रहा है। कहा जाता है की बच्चे बुढेपके सहारा होते है मगर आर्थिक स्त्रोत और पैसे कमाने के लिए, परिवार के खुशी के लिए मुळ स्थान और रिस्ते को छोडकर अलग हुवे है। जिस मॉ – बाप ने बच्चो के लिए जीवन भर मेहनत की कुछ सपत्ती कमाई, शिक्षा पढाकर, काबील बनाया उस बच्चोने मॉ और बाप को बुडापे में अगल किया गया। उन मॉ- बाप को क्या लग रहा होगा। क्या मॉ- बाप बच्चोपर खुश हुवे होगे। मुझे लगता है की, मॉ- बाप लडको पर उस कारण खुश नही होगे क्योकी लडको को छोडकर रहना उनके दिल कभी खुश नही रहते होगे। फिर भी लोगो को खुश है यह दिखाते है।लडको की खुशी के लिए मॉ – बाप अपनी खुशी को दबाते नजर आते है। मॉ – बाप लडको घर जाते है मगर बहू उनको अच्छा बरताव नही करने कारण निराश होते हुवे वह गाव, शहर, मुळ स्थान लोट आते है। कुछ बहु सास- ससुर आने पर पती से झगडा, ताना मारण, सास- ससुर की बाते को बडा मोहाल बनाना, झगडा मोल लेना इस कारण पतीसे मॉ- बाप को दूर करना यह घटना वास्तविक परिस्थीती में खुले ऑख से नजर आ रहे है। खुद के लडको से दूर करने में आज की कुछ बहू कर रही है। यह कहा जाता है की, मॉ – बाप का दिल शहरो में नही लगता इस कारण वह गाव के तरफ रहते है। लोगो और पास- पडोस को यह नही पता होता की उनके साथ परिवार में दूर व्यवहार किया जाता है। बुढे होने कारण परिवार में ही उनके साथ दुजाभाव और अलग रखने की बाते कहा जाती है। किसी परिवार में बुढे मॉ- बाप बिमारी शिकार हुवे है तो उनको अलग रहने व्यवस्था कि जाती है यह आप सभी ने दिखी होगी। परिवार के साथ होते हुवे भी, दिल से दु:खी मॉ- बाप नजर दिखाई देते है। कूछ परिवार में दो ही लडकीया थी उस लडकीयो की शादी करने कारण मॉ- बाप को अकेला रहना पड रहा है। कुछ परिवार दो लडके होते हुवे भी मॉ- बाप अलग रहते है। कुछ परिवार में पती या पत्नी की मृत्यू के कारण सिर्फ एक को ही अलग रहनी की स्थिती आ गयी । हालही में रिस्तेदारो की भागीदारी पविारीक कार्यक्रमो में कमी हो गयी।कुछ रिस्तेदार पहिले कोई भी कार्यो में मदत करते अब नही दिखाई थे। उनमें बदलाव दिखाई दे रहा है।

परिवार में प्रेम और आपसी अपनापन की कमी आधुनिक समाज में एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। इसके पीछे कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारण हो सकते हैं। परिवार का उद्देश्य केवल साथ रहना नहीं। बल्कि भावनात्मक जुड़ाव, समर्थन और आपसी समझ को बढ़ावा देना होता है। लेकिन बदलते समय के साथ यह भावना कमजोर होती जा रही है। लोग आज भौतिक सुख - सुविधाओं को अधिक महत्व देने लगे हैं। इस दौड़ में परिवार के सदस्यों के साथ भावनात्मक जुड़ाव और अपनापन पीछे छूट रहा है। नौकरी, शिक्षा और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के कारण लोग इतने व्यस्त हो गए हैं। वे अपने परिवार के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते। एक ही परिवार में रहकर लोग अलग-अलग उपकरणों में व्यस्त रहते हैं। पहले संयुक्त परिवारों में सभी मिल-जुलकर रहते थे। और अपनापन बना रहता था। लेकिन आज एकल परिवारों में जिम्मेदारियाँ और भावनात्मक समर्थन सीमित हो गया है। आधुनिकता और पश्चिमी जीवनशैली के प्रभाव से पारिवारिक मूल्यों और परंपराओं को कम महत्व दिया जा रहा है। जिससे आपसी रिश्तों में दूरी बढ़ रही है। आज लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वार्थ को प्राथमिकता देते हैं। वे अपने लाभ और इच्छाओं को परिवार से ऊपर रखने लगे हैं। परिवार के सदस्य एक - दूसरे की भावनाओं और समस्याओं को समझने के लिए पर्याप्त बातचीत नहीं करते। इससे गलत फहमियाँ बढ़ती हैं और अपनापन कम होता है। परिवार में बाप मुख्य

कमाने वाले सदस्य होता था। माँ परिवार संभालती थी, और बच्चों की देखभाल करती थी। अब बाप केवल कमाने तक सीमित नहीं हैं। वे परिवार के कामों और बच्चों की परवरिश में भी भागीदार बनते हैं। महिलाएँ भी अब नौकरी करती हैं। आर्थिक रूप से परिवार का समर्थन करती हैं। साथ ही वे पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी निभाती हैं। पारंपरिक भूमिका बच्चे परिवार के बड़ों का सम्मान करते थे। उनके बताए नियमों का पालन करते थे। बच्चों को पढ़ाई और परिवार की परंपराओं में सिखाया जाता था। वर्तमान में बच्चे अब स्वतंत्रता और आधुनिकता की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। जिससे परिवार के साथ उनका जुड़ाव कम हो गया है। वे निर्णय लेने में अधिक भागीदार बनते हैं और पारिवारिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं। पारंपरिक भूमिका बुजुर्ग परिवार के मार्गदर्शक और निर्णयकर्ता होते थे। वे परिवार के बच्चों को संस्कार और परंपराओं की शिक्षा देते थे। वर्तमान में संयुक्त परिवार टूटने से बुजुर्गों की भूमिका सीमित हो गई है। उन्हें अक्सर अकेले रहना पड़ता है या उनकी बातों को नजर अंदाज किया जाता है। हालांकि, कुछ परिवारों में अब भी बुजुर्ग सलाहकार की भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक भूमिका भाई - बहन एक - दूसरे के प्रति भावनात्मक और जिम्मेदारी से जुड़े रहते थे। बड़े भाई-बहन छोटे भाई - बहनों का मार्गदर्शन करते थे। वर्तमान में एकल परिवार और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के कारण भाई - बहन के रिश्ते में दूरी बढ़ी है। दोनों के बीच पारस्परिक समझ और समानता को अधिक महत्व दिया जाता है। पारंपरिक भूमिका रिश्तेदार अक्सर परिवार का अभिन्न हिस्सा होते थे और किसी भी कार्य या परेशानी में सहयोग करते थे। वर्तमान में रिश्तेदारों के साथ संबंध औपचारिक होते जा रहे हैं। मिलना - जुलना कम हो गया है ओर सीमित हो गया है। लोग नौकरी और शिक्षा के लिए अपने परिवार से दूर रहने लगे हैं। काम और व्यक्तिगत जीवन के कारण पारिवारिक समय कम हो गया है।

निष्कर्ष:-

परिवार में प्रेम और अपनापन बनाए रखना हर सदस्य की जिम्मेदारी है। यह केवल भावनात्मक संतोष ही नहीं देता। बल्कि एक सशक्त, खुशहाल समाज का निर्माण भी करता है। संवाद, समय, आपसी समझ के ज़रिए परिवार को एकजुट रखा जा सकता है। परिवार में सदस्यों की भूमिकाओं में समाज के विकास का हिस्सा है। इन परिवर्तनों के साथ पारिवारिक मूल्यों, प्रेम, और आपसी समझ को बनाए रखना बहुत जरूरी है। परिवार के सदस्यों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों में समय के साथ कई बदलाव आए हैं। सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण पारंपरिक भूमिकाओं में बदलाव नई जिम्मेदारियों का समावेश हुआ है। परिवार के सभी सदस्यों को एक साथ समय बिताने की आदत डालनी चाहिए। साथ में खाना, यात्रा पर जाना, त्योहार मनाना अपनापन बढ़ाने में मदद करता है।खुलकर बात करने से गलत दफहमियाँ दूर होती हैं। रिश्ते मजबूत होते हैं। परिवार के सदस्य एक-दूसरे की भावनाओं को समझने की कोशिश करें। उस समय को परिवार के साथ बिताएँ।पुराने रीति-रिवाजों और परंपराओं को अपनाकर आपसी जुड़ाव को मजबूत किया जा सकता है। परिवार के हर सदस्य को सम्मान और समर्थन देना आवश्यक है। छोटी-छोटी बातों में खुशी तलाशें और एक-दूसरे की मदद करें। परिवार का वातावरण प्रेम और स्नेहपूर्ण होना चाहिए।

संदर्भ:-

- *भार्गव, नरेश., वेददान, सुधीर., चतुर्वेदी, अरूण., लोढा, संजय. (2021). भारतीय समाज, जयपूरः रावत पब्लिकेशन्स.*
- *आर्या, गीता. (2018). परिवार का महत्व और उनका बदलता स्वरूप, जुलाई.*
- *कापडिया, के. एम.(1962). भारतवर्ष में विवाह एवं परिवार, नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसी दास.*
- *Shah.A. M.(1973). The Household Dimension of the Family in India: A Field Study in a Gujarat Village and a Review of Other Studies. New Delhi: Orient Longeman.*
- *काचोळे, दा. धो. (2009). भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, औरंगाबादःकैलास पब्लिकेशन्स.*
- *भार्गव, नरेश., वेददान, सुधीर., चतुर्वेदी, अरूण., लोढा, संजय. (2021). समाजशास्त्र, जयपूरः रावत पब्लिकेशन्स.*
- *https://www.prabhasakshi.com/currentaffairs/importance-of-family-and-its-changing-nature आज के समय में परिवार का महत्व और उसका बदलता स्वरूप*